ISSN : 2581-7353

खंड-2 अंक-4

पौष-माघ-फाल्गुन, 2077/जनवरी-मार्च, 2020

संवाद पथ

जनसंचार एवं पत्रकारिता केंद्रित पत्रिका

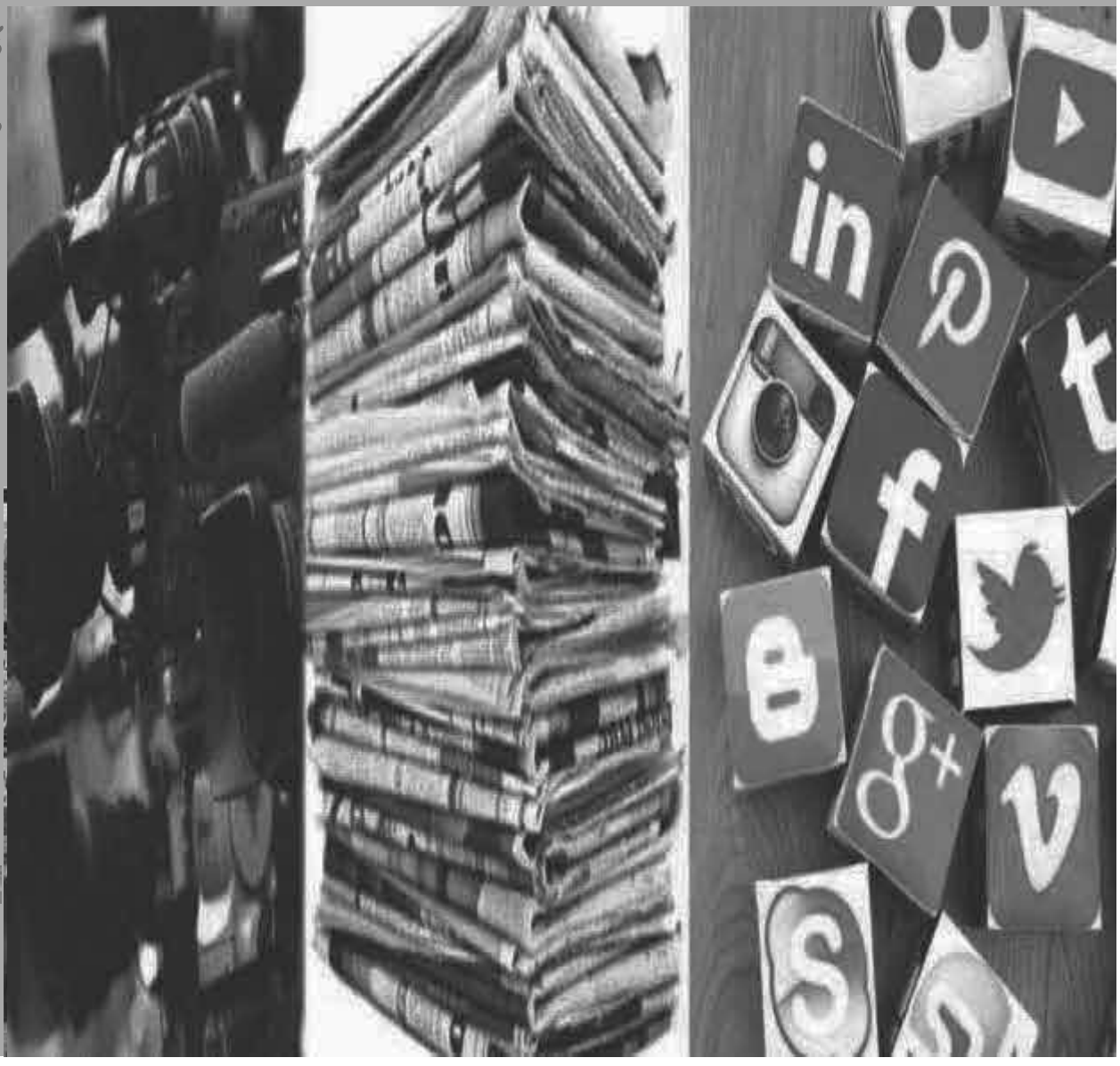

संवाद पथ : जनसंचार एवं पत्रकारिता केंद्रित पत्रिका

जनवरी-मार्च, 2020

खंड-2 अंक-4

अनुक्रम

	दृष्टिकोण		5
1.	राष्ट्रीय सुरक्षा में सोशल मीडिया और फ़ेक न्यूज़ की चुनौती	संजय द्विवेदी	7
2.	सोशल मीडिया की परिभाषा : एक अध्ययन	विनीत कुमार झा उत्पल	12
3.	सोशल मीडिया का भारतीय लोकतंत्र में प्रभाव : गैर हिंदी भाषी राज्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (आई सी सी एस आर, इम्प्रेस द्वारा वित्त पोषित)	संजय सिंह बघेल	20
4.	सोशल मीडिया–नया संचार माध्यम	महेश चंद्र धाकड़	36
5.	सांस्कृतिक वर्चस्ववाद बनाम बहुलतावादी संस्कृति	प्रीति	38
6.	सोशल मीडिया एवं टिकटॉक	मुकेश कुमार मिरोठा	42
7.	सोशल मीडिया में फ़ेक न्यूज़ और राष्ट्रीय सुरक्षा	शिखा शुक्ला	52
8.	ऑनलाइन–संपादन	जितेंद्र कुमार सिंह	69
9.	निजता का अधिकार : एक मौलिक अधिकार तथा सोशल मीडिया एवं आधार परियोजना द्वारा निजता के अधिकार के उल्लंघन पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	अनुराधा	77
10.	डिजिटलीकरण और मीडिया का बदलता स्वरूप	मधु लोमेश	85
11.	भूमंडलीकरण सोशल मीडिया और ज़िंदगी की चुनौतियाँ	विपिन कुमार शर्मा	90
12.	पत्रकारिता और साहित्य के परिप्रेक्ष्य में सोशल मीडिया	रुद्रेश नारायण मिश्र	96
13.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सोशल मीडिया की भूमिका	सीमा शर्मा	102
14.	प्रौद्योगिकी विकास के दौर में साहित्य और वेब दुनिया	सोनपाल सिंह	106
15.	डिजिटल भारत में दिव्यांगों के समेकित विकास के अवसर	सुधीर के. रिन्टन	112
16.	सोशल मीडिया और साइबर क्राइम	अमिता तिवारी	117

डिजिटल भारत में दिव्यांगों के समेकित विकास के अवसर

सुधीर के. रिन्टन

दिव्यांग शब्द का शाब्दिक अर्थ चाहे जो हो परंतु इस शब्द को सुनते ही दिमाग में दो बातें बड़ी मजबूती से उभरती हैं, पहली यह कि हमारे समाज का एक तबका ऐसा भी है जिसे समाज की मुख्य धारा में शामिल करने के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। दूसरी, कुछ ऐसी संवेदनाएँ जिनमें दया, करुणा और विवशता की एक मिली-जुली झलक दिखाई पड़ती है और यदि ऐसा नहीं होता तो भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को शायद यह नहीं कहना पड़ता कि ''दिव्यांगों को दया नहीं, स्वाभिमान चाहिए। इसके लिए संवेदना पूर्ण वातावरण बनाएँ, ताकि उनका स्वाभिमान प्रकट हो। दिव्यांग भी बराबरी की अपेक्षा रखते हैं।''[1]

हालाँकि, भारतीय दृष्टि में बहुत पहले से ही संवेदना एक मूल अवयव रहा है, हम किसी ऐसे समाज की कल्पना ही नहीं कर सकते थे जहाँ किसी भी व्यक्ति को एक-दूसरे से भिन्न या अलग स्वीकार किया जाता हो। यहाँ सभी को बराबरी का दर्जा प्राप्त है। हमारा समाज इस अवधारणा को मानने वाला रहा है—

समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्।
न हिनस्त्यात्मनाऽऽत्मानं ततो याति परां गतिम्॥[2]

''अर्थात, जो मनुष्य सभी में एक समान भाव से परमात्मा का दर्शन करता है, वह स्वयं अपने मन के द्वारा अपने आप को कभी नष्ट नहीं करता और इस प्रकार वह परम-गति को प्राप्त करता है''। भारतीय समाज में 'समभाव' को न सिर्फ आत्मिक सुख के लिए आवश्यक माना गया है, बल्कि परमगति प्राप्त करने का साधन भी माना गया है। भारतीय समाज में किसी को भी कष्ट नहीं पहुँचाने का भाव (अहिंसा), मन और वाणी से एक होने का भाव (सत्यता), गुस्सा रोकने का भाव (क्रोधविहीनता), कर्तापन का अभाव (त्याग), मन की चंचलता को रोकने का भाव (शान्ति), किसी की भी निंदा न करने का भाव (छिद्रान्वेषण), समस्त प्राणियों के प्रति करुणा का भाव (दया), लोभ से मुक्त रहने का भाव (लोभविहीनता), इंद्रियों का विषयों के साथ संयोग होने पर भी उनमें आसक्त न होने का भाव (अनासक्ति), मद का अभाव (कोमलता), गलत कार्य हो जाने पर लज्जा का भाव और असफलता पर विचलित न होने का भाव (दृढ़-संकल्प) रचा-बसा रहा है। ऐसा भाव विश्व की किसी अन्य सभ्यता या संस्कृति में देखने को नहीं मिलता।

दिव्यांग समाज में परिवार और उसकी जिम्मेदारियों का बोझ पूरा परिवार संयुक्त रूप से उठाता रहा है। भारतीय सामाजिक ताने-बाने में परिवार नामक संस्था अन्य समाजों से काफी

ISSN : 2581-7353

खंड-3 अंक-1
चैत्र-वैशाख-ज्येष्ठ, 2077/अप्रैल-जून, 2020

संवाद पथ

जनसंचार एवं पत्रकारिता केंद्रित पत्रिका

अनुक्रम

	दृष्टिकोण		5
1.	लोकतंत्र के नाम पर चैनल्स की मारामारी	क्षमा शर्मा	9
2.	पत्रकारिता में नैतिकता : मुद्दे और चुनौतियाँ	संजय द्विवेदी	15
3.	मीडिया नैतिकता का दार्शनिक पक्ष	बच्चा बाबू	22
4.	जनसंचार एवं पत्रकारिता : बदलते मूल्यों की त्रासदी	गिरीश पंकज	32
5.	देश में स्वतंत्र मीडिया से ज्यादा जरूरी सशक्त, उत्तरदायी व संवैधानिक महत्ता प्राप्त मीडिया की	मनोहर मनोज	37
6.	भारतीय संस्कृति पर मीडिया का दुष्प्रभाव	श्रीनिवास त्यागी	44
7.	भारत में जनसंचार माध्यमों के विभिन्न प्रकार और उनकी विकास यात्रा : एक अध्ययन	हरीश कुमार	51
8.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पत्रकारिता का दायित्व	स्वाति ग्रोवर	59
9.	स्वतंत्रता पूर्व हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति	जोगेंद्र सिंह मीणा	62
10.	भारत में प्रिंट मीडिया का क्रमिक विकास	जितेंद्र सिंह राजपुरोहित	70
11.	भारतीय प्रेस परिषद और मीडिया	संगीता गुप्ता	78
12.	नवजागरणकालीन प्रेस कानून एवं उसका प्रभाव	पुष्पेंद्र कुमार	86
13.	अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में बढ़ता अंतरसांस्कृतिक संचार	मुक्ता मर्तोलिआ	94
14.	बाज़ार और तकनीक	निशा नाग	99
15.	वर्तमान मीडिया का बदलता स्वरूप	सरोज कुमारी	105
16.	पत्रकारिता का स्वरूप एवं विज्ञापन की अवधारणात्मक व्याख्या	मुकेश कुमार त्रिपाठी	109
17.	विज्ञापन की व्यावसायिक संस्कृति	संगीता केशरी	114
18.	हिंदी पत्रकारिता में वस्तुनिष्ठता और निष्पक्षता की प्रासंगिकता	साक्षी जोशी	119
19.	भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका	सुनील कुमार	123
20.	सांस्कृतिक पत्रकारिता का मूल चरित्र	आलोक प्रभात	130
21.	तकनीकी विकास व जनसंचार माध्यमों के बदलते आयाम (टेलीविजन व इंटरनेट पत्रकारिता के विशेष संदर्भ में)	विवेक विश्वास	135
22.	भारतीय मीडिया और लोकतंत्र (टेलीविजन के संदर्भ में)	मधु कौशिक	139
23.	नए सामाजिक माध्यम और जनमत निर्माण	कविता भाटिया	145
	इस अंक के लेखक		150

तकनीकी विकास व जनसंचार माध्यमों के बदलते आयाम (टेलीविजन व इंटरनेट पत्रकारिता के विशेष संदर्भ में)

विवेक विश्वास

समाज बदल रहा है, लोगों की जीवन-शैली बदल रही है और साथ ही संचार की दुनिया भी बदल रही है। लोगों की बदलती जीवन-शैली के अनुरूप संचार तकनीक तथा संचार का स्वरूप भी बदल रहा है। जिस तरह हमारी सभ्यता कबीलाई युग से एक लंबा सफर तय करते हुए उत्तर आधुनिकता की ओर अग्रसर है, उसी प्रकार जनसंचार की दुनिया भी गुटेनबर्ग युग से काफी आगे निकलते हुए आज मीडिया कन्वर्जेंस तक पहुँच गई है।

संचारविदों का मानना है कि संचार के बिना जीवन असंभव है। जीवन की शुरुआत के साथ ही संचार व संचार माध्यम अस्तित्व में आ गए। कबीलाई युग में ही डुगडुगी, लोकगीत, लोकनृत्य, कठपुतली नृत्य आदि रूपों में जनसंचार की शुरुआत हो चुकी थी। जिसे चीन में कागज के आविष्कार व जर्मनी में जॉन गुटेनबर्ग द्वारा आधुनिक छपाई तकनीक के आविष्कार ने नया आयाम दिया। वर्तमान विश्व को कबीलाई युग से आगे बढ़ते हुए विश्व-ग्राम (ग्लोबल विलेज) की अवधारणा तक पहुँचने में संचार माध्यमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका व योगदान को नकारा नहीं जा सकता। वैसे तो इसमें संचार के हर रूप ने अपने-अपने तरीके से योगदान दिया है, परंतु मुद्रित माध्यमों की अपेक्षा टेलीविजन और अब इंटरनेट का योगदान अधिक महत्त्वपूर्ण रहा है, जिसका मूल कारण टेलीविजन की दृश्य-श्रव्य संचार तथा इंटरनेट की द्रुतगामी संचार क्षमता है। टेलीविजन संचार का एक ऐसा साधन है, जो ध्वनि के साथ-साथ चलते-फिरते चित्रों को भी हम तक पहुँचाता है। यही वजह है कि संचार का यह माध्यम पूर्व के अन्य संचार माध्यमों से अधिक प्रभावी रहा। फलस्वरूप टेलीविजन सूचना, शिक्षा तथा मनोरंजन के साथ-साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा संपूर्ण विश्व को एक सूत्र में बाँधने का महत्त्वपूर्ण जरिया बन गया। वैसे तो टेलीविजन का आविष्कार स्कॉटलैंड के वैज्ञानिक 'जॉन लोगी बेयर्ड' ने 1922 ई. में ही कर दिया था और अमेरिका तथा यूरोपीय देशों में इसका प्रसार भी अपेक्षाकृत रूप से जल्दी ही हो गया, परंतु एशियाई देशों तक पहुँचते-पहुँचते (जापान में, 1939 ई. में) डेढ़ दशक से भी अधिक समय लग गया। भारत में तो टेलीविजन का प्रारंभ 37 साल के लंबे अंतराल के पश्चात् (15 सितंबर, 1959 को) हुआ। "अमेरिका में टेलीविजन की विधिवत शुरूआत 11 मई,1928 से जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी (GE) ने की थी। उसने मंगलवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार, सप्ताह में तीन दिन दोपहर डेढ़ बजे से साढ़े तीन बजे तक दो घंटे के अपने नियमित व्यवसायिक टेलीविजन कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू किया था। प्राय: यही पहला नियमित टेलीविजन कार्यक्रम प्रसारण माना जाता है।"

UGC No. 45149
Impact Factor : 3.50
ISSN : 2231-1688

शोध दर्पण

SHODH DARPAN

An International Multidisciplinary Peer Reviewed and Refereed Research Journal

Vol. XII , No. 1
January-June 2021

Editor-in-Chief
Dr. Gyan Prakash Mishra
Department of Journalism
Banaras Hindu University, Varanasi

Editor
Dr. Rajesh Kumar Rai

SHODH DARPAN

शोध दर्पण

An International Multidisciplinary Peer Reviwed and Refereed Research Journal

Vol. XII **No. 1** **January-June** **2021**

CONTENTS

- **A New Vision of Dr. APJ Abdul Kalam: Education for Sustainable Development** — 1-10
  Preaksha Rai
  Mohammad Shaheer Siddiqui
- **Media And Gender Stereotypes: A rational discussion** — 11-17
  Vinay kumar Rai
- श्यामानन्द झा के गीतिकाव्य में वेदना तत्व का विश्लेश्णात्मक अध्ययन — 18-21
  सबीता कुमारी
- पद्म पुराण में सूर्य की आराधना — 22-25
  यमुना सरेवार
- भक्तिकाव्य का धार्मिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक महत्व — 26-40
  अनुपम सिंह
- **The Essence of Indian Diaspora and Celebration of Pravasi Bhartiye Divas** — 41-46
  Sweekriti
- **Comparative Study of Anxiety Among District Level Sportspersons** — 47-50
  Kamlesh Yadav
- विस्थापन एवं आर्थिक सामाजिक समस्याऐं सिंगरौली (म0प्र0) जिले के विशेष संदर्भ मे — 51-54
  लक्ष्मी
- **Construction of Run a Three Test Norms for Cricket Players of Delhi** — 55-58
  Dr. Anuj Kumar
- **An Analytical study of "Labyrinth" in the Foreigner: Arun Joshi** — 59-68
  Sujeet Kumar Singh

Media And Gender Stereotypes: A rational discussion

Vinay kumar Rai
Assistant Professor, Department of Journalism, Maharaja Agrasen College, University of Delhi

Abstract

Gender Stereotyping has deepened its roots in society and is needed to be dealt with as early as possible. The media has a greater influence on the views of Gender. Media plays a vital role in the process of gendering by exposing male and female children to stereotypical masculine and feminine activities. The images of sexes many of which eternalize unrealistic, stereotypical, and limiting perceptions are being communicated by all the forms of media. This article provides an overview of how media leads to the under-representation of women, and how men and women are being constantly sexualized on different forms of media.

***Keywords** : Gender Stereotypes, Gendering, Objectification, Sexualism, Gender Portrayal*

Introduction

We live in a world that is "media-saturated', it is apt to say that no one can escape from the influence of mass media. In our daily lives, media exercise massive influence and power in unexampled ways. Media do injects its message straight into the minds of a passive audience, that's why the media's role in inculcating gender stereotyping in society can not be ignored. The different forms of media portray men and women in stereotypical ways that reflect and sustain socially endorsed views of gender. *Marshal McLuhan,* in his book *Understanding Media: The Extensions of Man* uses historical quotes and anecdotes to study how these new forms of media have changed the insight of society, with a clear-cut focus on the effects of each medium contrary to the content that is delivered by media.

One can describe print and visual media, a television in particular, as arenas for constructing stable notions of gender